समर्थ के हिंदी पद

समर्थ के हिंदी पदों की संख्या भी अधिक है जो मठों की जीर्णशीर्ण पोथियों से प्राप्त हुए हैं। उनमें इनके पदों का कोई व्यवस्थित संचय नहीं है। प्रत्येक जीर्ण पोथी में समर्थ के अतिरिक्त अन्य संतों के भी पद मिलते हैं। 'समर्थ गाथा' तथा अन्य स्रोतों से जो रामदास के [illegible] प्राप्त हुए है उनमें छं[illegible] भी वे राग रागिनियों में गाए जा सकते हैं। उनमें परमात्मा की सर्वव्यापकता, बाह्य आडंबर के प्रति अरुचि, समता आदि के भाव ध्वनित हुए हैं। समर्थ रामभक्त थे। अतएव प्रत्येक स्थलपर [illegible] का शब्दावली भी उपयोगी को देखते थे। अतः ये राम को 'मोहन नागर' 'साईं' आदि [illegible] और प्राचीन करते हैं। वह कहते हैं—

जित देखो उत राम हि रामा।
जित देखो उत पूरण कामा॥
तृण, तरुवर, सातो सागर।
जित देखो उत मोहन नागर॥

७. समर्थ की कविता समुद्रा अफार - आहे (समर्थ की कविता समुद्रविस्तृत है) पांगारकर - समर्थ ग्रंथ भांडार पृष्ठ ६।

८. देखिए पांच संत कवि पृष्ठ ४१६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल, थल, काष्ठ,पपाण, अकाशा।
चंद्र, सूरज, नच, तेज, प्रकाशा॥
मोरे मन मानस राम भजोरे।
रामदास प्रभु ऐसा करो रे॥
यदि मन राम नहीं समाया है तो तीर्थ, व्रत,
स्नान, योग करने से भी क्या लाभ होगा।
राम न जाने नर तो क्या जी।
धन दौलत सब माल खजीना,
और मुलुख सर किया तो क्या जी।
गंगा गोमती रेवा तापी,
और बनारस न्हाया तो क्या जी।

समर्थ की दृष्टि व्यापक और उदार थी। वह राम, रहीम, कृष्ण सभी को एक ही रूपमें देखते थे। उनके कृष्णसंबंधी पद भी हमें हस्तलिखित पोथियों में प्राप्त हुए हैं। वे हिंदू मुसलमानों के परस्पर अनुदार भाव को दूर करने के लिये उपदेश देते और उनकी धार्मिक कट्टरता पर प्रहार करते थे। हिंदू और मुसलमान नाम से दो मजहब भले ही चले हों, पर दोनों का सर्जनहार तो एक ही है। वही सृष्टि को चलाता है—

हिंदू मुसलमान मजहब चले सरज्जनहारा,
साहेब अलम कुं चलावे सो अलमथी न्यारा।
घट घट साहियां रे अजब अला मिया रे,
ये हिंदू मुसलमान दोनों चलावे पछाने सो भावे।

जिसकी परमार्थ के प्रति लगन है, वह अल्ला मिया को प्यारा है। संसार में सभी वस्तुएँ क्षणभंगुर हैं, परंतु 'फैवी' (परमार्थसाधक) नहीं—

देहरा तुटेगा मशीदी तुटेगी,
सुमरन को जहाँ
सो कैसो रे भाई।

शाकुंतल में प्रकाशित हिंदी पद लेखक के संग्रह में हैं, उनमें से कुछ नीचे दिए जाते हैं। मैं रामदास के समय हिंदी जिस प्रकार लिखी जाती थी उसके उदाहरण के लिये पद प्राचीन पोथियों से अविकल उतारे गए हैं।

पद

ज्याहा[1] ज्याऊ[2] ताहा राम सही।
सब खोजत सो पाछे रही॥
ज्याहा ली ज्यावे ताहा दील ज्यावे।
राम बीन मोहे कछु नहीं भावे॥

१. जहाँ। २. जाऊँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

येक छ्यपावे[1] येक दीखावे।
ज्याहा भावे ताहा राम लीज्यावे[2] ॥
रामदास वंदा उठी च्यले[3]।
ज्याहा जाऊँ ताहा राम मीले ॥

पद (राग काफी)

॥ ध्रु ॥ लटपटी पाग बनी रे ॥
कुंकुं (केशर) तीलक बन्यो है कोटी च्यंद बनी रे।
पीत बसन बहु भुखन[4] मंडीत यमकत माल मनी रे ॥
धनुष बाण लघु ठान बीराजे, पीरत बहुत बनी रे।
देव के देव कुं आनी मीलावे,[5] ऐसा कौन गुणी रे ॥
कोनी तेहतीस वंद छुरावे धन पीता जननी रे।
धीर उदार फणीवीर जेठो दास को राम धनी रे ॥

पद (राग मारू)

नयोनन मो रघुवीर मेरो[6]।
कर शरच्याप सलीलज्य[7] लोचन ॥
ठाडे[8] भये रणधीर ॥ १ ॥
ललीत[9] तउ नवनागर लीला।
ज्यव[10] तव देपत[11] धीर[12] ॥ २ ॥
रामदास की प्रेम की पीरत।
मयरकत[13] नयनन[14] नीर ॥

साथ में [illegible]

अर्थ [illegible] पद

दयाल[15] पतीत पा[illegible] को।
[illegible] शब्दावली भी उपयोगी
ज्ञान न ज्यानु[16] ध्यान न ज्यानु [illegible] है क[illegible] शब्दों के
अंतर भाव न हो ॥ १ ॥ और प्राचीन
धरम न कीया दान न दीया। [illegible]
मुगती[17] कुं ज्यावनं हो ॥ २ ॥
रामदास कहे मेतौ[18] अैसा।
फोकट[19] खावन हो ॥ ३ ॥

१. छिपावे। २. ले जावे। ३. उठ चले। ४. भूषण। ५. आनि लाकड़ें। ६. पाठांतर धुलिया की पांडुलिपि, क्रमांक १८४० – मोरो नयनन मों रघुवीर। ७. सलीलज (सलिलज, कमल) ८. ठाड। ९. ललित। १०. जव ११. देखत। १२. स्थीर। १३. मरकत। १४. नयनों में। १५. पतित। १६. जानूं। १७. मुक्ति। १८. मैं तो। १९. मुफ्त।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद

नाथ सनाथ करो अनाथ को नाथ सनाथ करो ॥
वेद बखानें ब्रीद तमारो ।
सो भ्युटा[१] न करो ॥ १ ॥
भगतन की तन राखो मन की ।
दुरी दुरी न धरो[२] ॥ २ ॥

पद

दीन दयाल दयाल करे हो । दीन दयाल ॥
येई संसार अपार दुख को ।
जीवन उदास भयो ॥ १ ॥
ज्यानत ज्यानत मांगत मनं कुं ।
अैसा काम कीया ॥ २ ॥
दास दीन ज्यन सरन तमारे ।
कहत सब गया ॥

पद

लाज्य न कीज्यै हो भज्यन कुं ॥ लाज्य न कीजै हो ॥
आगम नीगम संत समागम ।
अंतर लीजै हो ॥ २ ॥
दास दया कर अंतरवासी ।
तन मन दीज्ये हो ॥ भज्यन कुं ॥

पद

भगतन की तन[illegible] पद
अंतर की [illegible] अंतर
[illegible] हे मन हो ॥ १ ॥
मन की पीरत मन मो राखी ।
च्याखी संतन हो ॥ २ ॥
रामदास की अंतरलीला ।
अंतर भावन हो ॥

पद

कांहा छ्यपाऊँ[३] हो नीरंजन ।
काहा छपाऊँ हो ॥
ज्याहा देखुं ताहा प्रगट गुसयां[४] ।
कैसो लै ज्याऊ हो ॥ १ ॥

१. झूठा । २. दूरी धारण न करो । ३. छिपाऊँ । ४. गुसैयां ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुज में[1] ठाकुर में ज्यान[2] न पाउ हो ॥ २ ॥
रामदास ज्यन नीरगुन के गुन ॥
ज्यव[3] तव[4] गाउंहो ॥ ३ ॥

पद

सब घट में है रे खुदाई।
खाली ज्यागा[5] नहीं रे खुदाबीन ज्यनेश्त[6] नाहीं रे ॥ १ ॥
भ्युटी कहे सो भ्युटी दीवानी खबर न पाई रे।
दास फकीर कहे ईतना ही अंतर माही रे ॥ २ ॥

पद

प्रगट कौन करे राम प्रगट कौन करे।
आगम नीगम शेश वीरची[7] ताकुं[8] भुली परे ॥ १ ॥
अलख नीरंज्यन[9] सब ज्यन[10] माही ॥ देखत रूप सरे ॥ २ ॥
दास कहे गम संत समागम ॥ अंतर माही धरे ॥ ३ ॥

पद

वावरी भई तन मेरी ॥ वावरी भई ॥
जीद[11] देखुं तीद[12] गड़े[13] नीरंज्यन। च्यमकत भुली रही ॥ १ ॥
नीरखत नीरखत देखत मन मो तन की सुधि गई ॥ २ ॥
दास के पास दयाल की मुरत[14]। सब घट ये सही ॥ ३ ॥

पद

ज्यानी दीवानी रे बावा ज्यानी दीवानी रे।
[illegible] न मानें [illegible] अर्थ [illegible] गुमानी रे बावा ॥ १ ॥
ज्यानी में ज्यन [illegible] ज्यान[15] मानी रे बावा ॥
दास फकीर कहै मनु धीर असवत मानी [illegible]

साथ में [illegible] को शब्दावली भी उपयोगी [illegible] है और शब्दों के [illegible] और प्राचीन [illegible]

पद

पानी में प्यासा मुवा[16] रे अल्लम[17] पानी में प्यासा मुवा।
तीरत तीरत[18] देख कव[19] लक घुंडत हुये[20] कुवारे ॥ २ ॥
मारग छ्यारी कुमारग ज्यावे। तैसा हाल हुवा रे।
ज्युमीन[21] खोज्य अनाज्य चलावे चुकी रही चुवारे ॥ ३ ॥
कहे दास सजन छोड़ी खजीनां। मागतु है ख्वारे ॥ ४ ॥

१. मुझमें। २. जान। ३. जैव। ४. तव। ५. जगह। ६. जानत। ७. विरंचि। ८. उसको। ९. निरंजन। १०. जन। ११. जिधर। १२. उधर। १३. जमे हुए। १४. मूर्ति। १५. ध्यान नहीं किया। १६. मरा रे। १७. आलम। १८. तीर्थ। १९. कब तक। २०. छूटता है। २१. जमीन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद (राग असावरी)

हरी रंग ज्यागे ताहा मन लोगे छूयोरी उपाधी से भागे रे।
बाज्य[1] बजावे हरि गुन गावे। नीरगुन भेद बतावे ॥ १ ॥
शामसुन्दर की महिमा लीला। जब तक जीये में भावे ॥ २ ॥
रामदास को प्रेम की मुरत सुनत बच्चन[2] मों आवे।

पद

भेख बनाया भेद न पाया मुंदल गंवाया रे।
नाथ नीरंजन ज्यन में ज्यागे ॥ उसकी सुध न लाया रे ॥
आसन छूयोरी सुकासन ज्यावे आसनं पोढ़ न पाया रे।
नाथ सनाथ की यो नहीं माना दास कहे क्या भाया रे ॥

पद

नाथ नाथ बुझ्ये सो नाथ हमारा ॥ वाको लछथन न्यारा रे ॥
कंथा काया मुद्रा माया उसमें नाथ छथपाया रे।
अलख ज्योगी बाज्ये सौंगी उसमें ज्योगी नाच्यारे ॥
माई मुंठी मार ज्यलावे। दास के सौ भाव्या रे ॥

पद

नंद के कान्ह गुवाला लाला शोभा तो आज्यु बनी ॥
तनु सुनील नीलालक नील। नील मुगुट मोर छाला ॥ १ ॥
अँखीया लाल उड़ाय गुलाल। लाल कीनी ब्रजबाला ॥ २ ॥
अधर लाल मुरली लाल लाल। लाल सरस कर ताला ॥ ३ ॥
तीलक पित वीभूखण पित। अंबर पीत रसाला ॥ ४ ॥
मलयज सेत मुगुट मणीसेत्व पद [illegible] माला ॥ ५ ॥
नवरस नागर शाम मुरमुख छूटे जहाँ [illegible] गुपाला ॥ ६ ॥
[illegible] बजनारि। देखत दास प्रतिपाला ॥ ७ ॥

पद

पर कामिनि संगत पिरत चलावत निकट अंग जैसे दूध पीलाई।
ज्यानि को रंग वीरंग न मानत। ज्यानत मानीनी सुखदाई ॥
अब काम ईहाँ, कब राम कहाँ। सुख भावत होवत होवत हारी।
दास कहे जन को मन राखत सज्जन काह करे अविकारी ॥ १ ॥
पर पुरुष कुं जोवत कामीनी जैसो चकोर मयंक सुनाहि[3]।
नैन सुनैन मीलवत पीरत नाहिं ज्यु कछु की कब कान मानहिं ॥
दास को रस वीर स जु च्यातक चीत नहीं कल पावे।
ऐसो पती भीगे पलखें तो राम के दासन को पद आवे ॥

१. बाघ। २. बचन। ३. सुनते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद

मेरे रामधनी धनी रे मोहे काहा कमी रे।
राम साहेब मेरा मागना वया है बीच्यारा॥
मेरि वाच्या[1] तेरो नाम दीन दीन लेते ज्यावे।
काम न भावे धाम न भावे ज्याहाँ ताहाँ राम भावे॥ १॥
रामदास कहे तोकु मागों सो तु मों कहे कुं देरे।
तेरो प्रेम मेरो अंतर ज्यामी रहय दे रे॥ २॥

पद

मोहन च्योरहूँ पकर ये।
इन मोकुं बहु वेर ठगायो अब के वेर छपन्यो[2]॥
शाम सुंदर सुं भेख फीरायो चंवकत चंवकत[3] आयो मोहन।
वंधन तोरि मटकी फोरी माखन सो सव खायो॥
यही ज्योंरतें[4] गोकुल पकन्यो ग्वारिनी हाथ वंधायो।
अव तो हुँ भगती उख्खल संग भाव रसा गइ लीयो॥ २॥
तव गोकुल थे राधाजी छुरायो अव तुम कौन छुरावे मोहन।
रामदास प्रभु प्रेम सुं वांध्यो अव कैसो ज्यान पावे मोहन॥
ज्योर हुँ पकन्यो॥

पद

भजले भाई तुजे राम दुहाई॥
भजले वावा भजले भाई भजले राम संगाती।
राम वीना सव धंदा गंधा कोउ न आवे साथी॥ १॥
साथ... नाम से काम... दुनियाँ है रे झूटी।
में ... को ... अंत ... पड न ज्यावे खोटी॥ २॥
सात वीसातहि छाड गये रे कोय ... लेखा।
रामदास कहे राम भजन से मोटे करम की ... का शब्दावली भी उपयोगी
... हैं ... शब्दों के
और प्राचीन
... ।

पद

ज्यागो ज्यागो भाई ज्यम[5] से करो लड़ाई॥
ज्यागो ज्यागो दुश्यो मन में माया धंदा झुटा।
पलख पल मों खल्लक देखत आया काल चपेटा॥ १॥
दृढ़ भगती की सील्ले पेनो येक भाव का घोड़ा।
राम नाम जप माला देखत भागे काल भगोडा॥ २॥
को लंगर कव अमर भयो है दो दोन की जिनगानी।
खीण[6] खीण घटत वढ़त नहीं कवहूँ ज्यों अंजुल को पानी॥

१. वाचा। २. सपड़ा मिला (मराठी सपड़ला) ३. चमकते चमकते। ४. जोर से।
५. यम। ६. क्षण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामदास कहे प्रभुजी को सेवक सुन रे मेरे भैया।
मानुख जनम गवाया तो तु अंतकाल पछताया॥

पद

गगन हमारी गुफा अवधु ब्रह्मांड हमारी देहली।
जत हमारि कसौटी अवधु सत हमारि झोली बावा॥ ध्रु॥
हम वैरागी गुरु के चेले नीत्य नीरंजन खेलें यकले।
अनुभव हमारी मुद्रा अवधु प्रची (परिचय) हमारी दंड बावा॥
शान बीभुति भरम चढ़ाउं तो फीरत दस खंड बावा।
धरमी हमारी पात्र अवधु अंबर हमारा प्याला बावा॥
हरिप्रसाद बोले नीत्य जोगी रामदास मतवाला बावा।

पद

माई[1] रे मोरे नैन शाम सुरंग॥
तरु तमाल[2]
खग मृग किट पतंग।
गगन सघन धरती सु संग।
लीन दिखत गोहन रंग
रामदास प्रभु रंग लागा।
(और) सब भये विरंग॥

पद

गोविंदे मुख मोरे राघव मुख मोरे॥
छुटत लख चौरासी फेरे।
लागत ज्यम परम पद [illegible] नीला॥
अरदहि सिद्धि [illegible] गुपाला॥
(पुरु) दास[3] तो जनम उदासी॥

पद

राम भजन कुं ढील न करिये। काल कसाई कुं मन डरिये।
ढील झोरि ढीवर उदधारे। पतीत व्याध वैकुंठ सीधारे॥
ढील छोरि[3] ये दास भी गावे। रसना अनुदीन रामु जपावे।

पद

राम को नाम यदी घट गावे।
नीशान वज्यावत वैकुंठ जावे॥
रखुमागद तीथीत्रय कुं गावे।
नगरि समेत वीमान चर्‌हावे[4]॥

१. माई (मां)। २. इसके आगे के शब्द अस्पष्ट हैं। पोथी जीर्ण है। ३. आलस्य त्यागकर। ४. चढ़ावे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद

गज्यपति[1] गखिका रामहिं गावे।
तन समेत वैकुंठ कुं ज्यावे॥
कहे रामनाम ही गाऊँ।
वैकुंठ कुं वैकुंठ ली ज्याऊँ[2]॥

पद

सुन मेरी रसना राम उच्चारो।
राम रस लीये रस डारो॥
खीर खांड तुकु मानत नीको।
राम रस पाइये और रस फीको॥
रामदास कहे सुन रसना मेरि।
राम भगति बीन गती नहीं तेरि॥

पद

मेरा बुहुत नाम।
ऐसा दुज्या कवन है रे किसकुं करं सलाम॥
हस्ती घोड़े कोट ही कोट चले दल बादल॥ १॥
रामचंद्र की फौज उठावे तो दल मेरण खुं दल॥२॥
तीन्ही लोक में उपर रावण उसकुं कीया खेव॥३॥
तेथीस कोटी देव छुरावे सब देवन को देव॥ ४॥

पद

गौडी। दशरथ के द्वार। जाय चकीत भये।
सांध[illegible] पवन[illegible] और भये नारद तुंवर गावतु है॥
में [illegible] को [illegible] अर्थ [illegible] दुंदभी बाजतु है।
रामदास बली ज्यावतु है॥ [illegible] कल्याण॥

(यहाँ जो कल्याण का नाम है, वह समर्थ रामदास के शिष्य [illegible] शब्दों के [illegible] शब्दावली भी उपयोगी और प्राचीन [illegible] लिखता जाता था।)

पद

आया वे जोगी आया।
जोगी आया॥
सींगी न पत्र वीभूति न वटवा।
नहिं कछु मुद्रा माया॥ १॥
नाग चर्म वोहरे (ओढ़े) बाघंबर पेहरे।
जटाजूट बंनाया॥ २॥

१. गजपति। २. ले जाऊँ। ३. तहाँ। ४. पवन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामदास साहि अंतरवासी ।
रयन दिन झुले काया ॥

पद

हरी गुण गा रे तव कैसे गावेगा ।
काल नीकट[1] जब आवेगा ॥
जैब कफ[2] कंठ दबावेगा । तब सास[3] न ले पावेगा ॥ १ ॥
गले फासी जम देवेगा । तब कौन हात्त गह लेवेगा ॥ २ ॥
जीमो विचीत्र दुख पावेगा । तब कौन सुमीत्र बच्चावेगा ॥ ३ ॥
पाव[4] संसार क सोवेगा । तब आस पास जन रोवेगा ॥ ४ ॥
ऐसा दाव[5] जब जब होवेगा[6] । तब[7] रामदास कब होवेगा ।
ज्याके हृदों में बद्ध नहीं । अकल की मुद्द शब्द नहीं ॥
लोभिया गुरुमुख नहीं । कीर्तन कीया तो क्या हुआ ॥ १ ॥
जो ग्यान में सामील नहीं । तन मु दया भी तिल नहीं ।
सद्भाव में कावील नहीं । माला लिया तो क्या हुवा ॥ २ ॥
काया के मन को थाटकर ममता खिया सों पाटकर ॥
सोया वीराया के खाट पर । हर हर कीया तो क्या हुवा ॥ ३ ॥
जिते पितर कु कुछ नहीं । जीन के जीकर कु इच्छ नहीं ।
चांटाल उसकु राक नहीं । तर्प न किया तो क्या हुआ ॥ ४ ॥
कुत्ता हुआ माहाल का धंधा करे जंज्याल का ।
आया तीरथ कर द्वारका । कासी गया तो क्या हुवा ॥ ५ ॥
गवगवा करे संसार का । जो कुज डा वा जान का ।
इच्छ नहीं उस राम का । जीता मरा तो क्या हुआ ॥ ६ ॥
आपकु जीता तो था नहीं [illegible] पाला ॥ ७ ॥
मनमैलु के धोया नहीं [illegible] ॥ ८ ॥

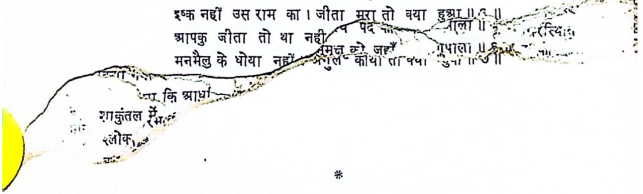

*

१. निकट । २. जब कफ से कंठ । ३. श्वास । ४. पांव । ५. डाव (मौका) । ६. खोवेगा । ७. तब नहीं है । ८. स्नान ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar